पंजाब केसरी 01/02/2026

# गांधी मैमोरियल नैशनल कॉलेज में 2 दिवसीय राष्ट्रीय बहु विषयक संगोष्ठी संपन्न

## देश के विभिन्न भागों से आए शिक्षाविदों, शोधार्थियों और विद्यार्थियों ने सक्रिय सहभागिता की

*कार्यक्रम के दौरान मौजूद गणमान्य व्यक्ति। (चंदमोहन)*

अम्बाला, 31 जनवरी (बलराम): गांधी मैमोरियल नैशनल कॉलेज, अम्बाला कैंट के स्नातकोत्तर एवं शोध विभाग द्वारा आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय बहु विषयक संगोष्ठी विकसित भारत-2047 के लिए सामाजिक-सांस्कृतिक एवं आर्थिक मार्गों का अनावरण समावेशी और सतत राष्ट्र निर्माण की रणनीतियां का द्वितीय एवं समापन दिवस गहन अकादमिक विमर्श, शोध प्रस्तुतियों और विशेषज्ञ संवाद के साथ सफलतापूर्वक संपन्न हुआ। यह संगोष्ठी भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद, आईसीएसएसआर, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा प्रायोजित रही, जिसमें देश के विभिन्न भागों से आए शिक्षाविदों, शोधार्थियों और विद्यार्थियों ने सक्रिय सहभागिता की।

द्वितीय दिवस के कार्यक्रम की शुरुआत औपचारिक सत्रों के साथ हुई, जिसमें महाविद्यालय के प्राचार्य डा. रोहित दत्त ने अपने संबोधन में संगोष्ठी के समग्र अकादमिक महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि इस प्रकार के राष्ट्रीय स्तर के अकादमिक मंच उच्च शिक्षण संस्थानों को नीति-निर्माण, सामाजिक उत्तरदायित्व और राष्ट्र-निर्माण की प्रक्रिया से जोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। उन्होंने संगोष्ठी के विषय को विकसित भारत-2047 की परिकल्पना से जोड़ते हुए अनुसंधान, नवाचार और मूल्य-आधारित शिक्षा की आवश्यकता को रेखांकित किया।

डा. राकेश कुमार, डीन एकेडमिक अफेयर्स, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय व विभागाध्यक्ष कम्प्यूटर साइंस एंड एप्लीकेशन विभाग के द्वारा पहले सत्र में एक आमंत्रित व्याख्यान, जिसमें डिजिटल परिवर्तन, उभरती हुई तकनीकों और भविष्य के लिए तैयार कौशल विकास पर मूल्यवान अंतर्दृष्टि प्रदान की गई। उनके संबोधन में विकसित भारत-2047 की यात्रा में शिक्षा, शासन और स्थायी विकास को मजबूत करने में तकनीकी नवाचार की भूमिका पर जोर दिया गया।

तकनीकी सत्रों के दौरान डा. वंदना गर्ग, महर्षि दयानंद यूनिवर्सिटी ने सत्र को संबोधित करते हुए शिक्षा, मानव संसाधन विकास तथा सामाजिक न्याय से जुड़े समकालीन मुद्दों पर अपने विचार प्रस्तुत किए। उन्होंने इस बात पर बल दिया कि अकादमिक शोध को सामाजिक सरोकारों से जोड़ना समय की आवश्यकता है तथा अंतर्विषयक दृष्टिकोण अपनाकर ही जमीनी समस्याओं के व्यावहारिक समाधान संभव हैं।

तकनीकी सत्र में पर्यावरण एवं सतत विकास मार्ग विषय पर केंद्रित चर्चाओं में जलवायु परिवर्तन, पारिस्थितिक संतुलन, संसाधन प्रबंधन और हरित प्रौद्योगिकी जैसे महत्वपूर्ण पहलुओं पर विचार-विमर्श किया गया। इस अवसर पर डा. राजेश कुमार शुक्ला ने कार्बन क्रेडिट तंत्र पर अपने विशेष व्याख्यान में बताया कि कार्बन ट्रेडिंग सतत विकास को प्रोत्साहित करने के लिए एक प्रभावी नीति उपकरण के रूप में उभर रहा है, जो पर्यावरण संरक्षण के साथ-साथ आर्थिक संतुलन स्थापित करने में सहायक है।

इसके पश्चात् आयोजित तकनीकी सत्र में शिक्षा, मानव संसाधन विकास, स्वास्थ्य, कल्याण एवं सामाजिक न्याय विषय पर प्रस्तुत शोध पत्रों के माध्यम से शिक्षा सुधार, कौशल विकास, सार्वजनिक स्वास्थ्य, मानसिक कल्याण तथा सामाजिक समावेशन जैसे विषयों पर व्यापक और अंतर्विषयक दृष्टिकोण सामने आया। इन प्रस्तुतियों ने यह स्पष्ट किया कि समावेशी विकास के लिए नीति, शिक्षा और सामाजिक संरचनाओं का समन्वय अत्यंत आवश्यक है।

समापन सत्र में मुख्य अतिथि प्रो. रामपाल सैनी, कुलपति, चौ. रणबीर सिंह विश्वविद्यालय, जींद ने अपने संबोधन में कहा कि शोध कार्य का वास्तविक मूल्य तभी स्थापित होता है जब उसका प्रत्यक्ष सामाजिक प्रभाव और नीति-निर्माण में उपयोग सुनिश्चित हो। उन्होंने युवा शोधार्थियों को समाजोन्मुखी अनुसंधान के लिए प्रेरित किया। इस अवसर पर प्रतिभागियों को प्रमाण-पत्र वितरित किए गए तथा सर्वश्रेष्ठ शोध पत्र प्रस्तुति पुरस्कार प्रदान कर अकादमिक उत्कृष्टता को सम्मानित किया गया।

इस दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का संयोजन डा. चंद्रपाल पूनिया द्वारा किया गया तथा समन्वयक के रूप में डा. नेहा अग्रवाल ने आयोजन की समस्त गतिविधियों के सुचारू संचालन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। कार्यक्रम का औपचारिक समापन धन्यवाद ज्ञापन डा. के.के. पुनिया द्वारा किया गया।